विश्व न्याय मन्दिर

रिज़वान 2013

विश्व के बहाईयों के प्रति

परमप्रिय मित्रों,

“ईश्वर की पुस्तक पूरी तरह खुली हुई है और ‘उसकी वाणी’ अपनी ओर मानवजाति का आह्वान कर रही है।“ सर्वोच्च लेखनी ने ऐसे उल्लास भरे शब्दों में एकता और सम्मेलन के युग के आगमन का वर्णन किया है। बहाउल्लाह ने आगे कहा है: “हे ईश्वर के मित्रों, अपने कानों को ‘उसकी’ पुकार की ओर केन्द्रित करो जो इस संसार द्वारा प्रवंचित किया गया है, और जो कुछ भी ‘उनके’ धर्म को महिमा-मंडित कर सके उसे दृढ़तापूर्वक धारण करो।“ अपने धर्मानुयायियों को प्रोत्साहित करते हुए वे आगे कहते हैं कि “तुम सब अत्यंत मित्रता और परिपूर्ण बंधुता की भावना के साथ परस्पर परामर्श करो, और अपने जीवन के बहुमूल्य दिनों को इस संसार को बेहतर बनाने तथा ‘उनके’ धर्म की संवृद्धि में लगा दो जो ‘पुरातन’ है और सबका ‘सम्प्रभु स्वामी’ है।“

प्रिय साथियों, जब हम बहाउल्लाह के आह्वान के उत्तर में समस्त विश्व में आपके द्वारा किए जा रहे पुनीत प्रयासों पर दृष्टि डालते हैं तो ये मर्मस्पर्शी वचन अनायास ही याद आ जाते हैं। ‘उनके’ आह्वान के भव्य प्रत्युत्तर के प्रमाण हर तरफ देखे जा सकते हैं। जो लोग दिव्य योजना के अब तक के विस्तार के बारे में जरा रुककर मनन करते हैं उनके लिए इस बात की अनदेखी करना असम्भव हो जाता है कि किस तरह ईश्वरीय शब्द की शक्ति एक के बाद एक देश में, एक के बाद एक क्लस्टर में, स्त्रियों और पुरुषों, बच्चों और युवाओं के हृदयों में उतर रही है।

अपने तात्कालिक यथार्थ को पढ़ने, अपनी सम्भावनाओं का विश्लेषण करने, तथा पाँच वर्षीय योजना की प्रविधियों और उसके साधनों का बुद्धिमतापूर्वक प्रयोग करने के लिए एक विश्वव्यापी समुदाय अपनी योग्यताओं को परिष्कृत करने के काम में जुटा हुआ है। अपेक्षा के अनुरूप, ऐसे क्लस्टरों में तेजी से अनुभव जुटने लगे हैं जहाँ सीखने की सीमाओं में विस्तार पूरी जागरूकता के साथ आगे बढ़ रहा है। ऐसी जगहों में, निरन्तर बढ़ती हुई संख्या में व्यक्तियों ने सेवा के लिए अपनी क्षमता को मजबूत करने में सक्षम बनाने वाले साधनों को अच्छी तरह जान-समझ लिया गया है। योजना को आगे बढ़ाने के लिए समुदाय के प्रयासों में क्रियाशील शिक्षण संस्थान मुख्य आधार के रूप में काम

करता है और, जितनी जल्दी सम्भव हो सके, संस्थान में भागीदारी के माध्यम से विकसित हुई योग्यताओं और कुशलताओं को व्यावहारिक प्रयोग में लाया जाता है। कुछ ऐसे समुदाय हैं जो अपनी दैनंदिन सामाजिक अभिक्रियाओं के माध्यम से उन लोगों के सम्पर्क में आते हैं जो विभिन्न प्रकार के प्रारूपों के जरिये आध्यात्मिक विषयों की खोज के प्रति खुले विचार वाले हैं, जबकि कुछ क्षेत्र में समुदाय स्थानांतरित होकर गाँव या सम्भवतः उस क्षेत्र के पड़ोस में स्थित लोगों की ग्रहणशीलता का प्रत्युत्तर देने की स्थिति में हैं। बढ़ती हुई संख्या में लोग दायित्वों का भार उठाने के लिए उठ खड़े हो रहे हैं, और इस प्रकार ऐसे मित्रों की संख्या बढ़ती जा रही है जो सह-शिक्षक, अनुप्रेरक और बच्चों के शिक्षकों के रूप में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं; जो प्रशासन और संयोजन कर रहे हैं; या जो कार्य में सहायता देने के लिए अन्य प्रकार से परिश्रम कर रहे हैं। सीखने के कार्य के प्रति मित्रों की समर्पण भावना स्वयं उनके प्रयासों की निरन्तरता और अन्य के प्रयासों में उनका साथ देने की इच्छा से अभिव्यक्त होती है। इसके अलावा, वे क्लस्टर के अन्तर्गत दृढ़ता से परिलक्षित कार्य-योजना की इस रूपरेखा के दायरे में एक-दूसरे के पूरक दो परिदृश्यों को समाहित करने में सक्षम हुए हैं: पहला, गतिविधियों की तिमाही योजना तैयार करना जो कि विकास-कार्यक्रम की एक लयात्मक धड़कन जैसी है, और दूसरा, बच्चों, किशोरों तथा युवाओं और वयस्कों के लिए शिक्षा की प्रक्रिया के स्पष्ट चरण। इन तीनों ही चरणों के अन्तर्सम्बन्धों को स्पष्ट रूप से समझते हुए, मित्रों को यह भली-भाँति ज्ञात है कि प्रत्येक चरण की अपनी खास गतिशीलता है, अपनी खास जरुरतें हैं, और अपने अन्तर्निहित गुण भी। सबसे बड़ी बात यह है कि वे जानते हैं कि सशक्त आध्यात्मिक शक्तियाँ अपना काम कर रही हैं, और उनके कार्य-प्रभाव को समुदाय की प्रगति झलकाने वाले परिमाणात्मक आँकड़ों से भी समझा जा सकता है तथा उसकी उपलब्धियों का बखान करने वाले एक-से-एक विवरणों के माध्यम से भी। भविष्य के लिए जो बात विशेष रूप से आशाजनक है वह यह है कि ये अनेक विशिष्ट एवं उल्लेखनीय खूबियाँ जो कि अत्यंत उन्नत किस्म के क्लस्टरों की विशेषता झलकाती हैं, वे ऐसे समुदायों में भी परिलक्षित हो रही हैं जो अभी अपने विकास के बिल्कुल आरम्भिक बिन्दु पर ही है।

मित्रों का अनुभव प्रगाढ़ होने के साथ ही, किसी क्लस्टर के अन्तर्गत जीवन का एक ऐसा समृद्ध और जटिल ढाँचा विकसित करने की उनकी क्षमता भी प्रकट हुई है जिसके दायरे में सैकड़ों या हजारों लोगों को भी समेटा जा सके। यह देखकर हमें कितनी खुशी होती है कि बहाई अपने प्रयासों से अनेक अन्तर्दृष्टियाँ प्राप्त कर रहे हैं। उदाहरण के

लिए, वे यह समझते हैं कि क्लस्टर के स्तर पर योजना का क्रमिक विकास एक गत्यात्मक प्रक्रिया है -- एक ऐसी प्रक्रिया जो अनिवार्यतः जटिल है और वह कोई तैयार सरलीकरण प्रदान नहीं करती। वे यह देख रहे हैं कि जैसे-जैसे वे मानव-संसाधन को विकसित करने तथा कार्य करने के लिए तैयार लोगों के क्रियाकलापों को संयोजित और सुसंगठित करने की अपनी इन दोनों ही क्षमताओं को विकसित करते हैं वैसे-वैसे योजना की भी प्रगति होती चलती है। मित्र यह महसूस करते हैं कि जैसे-जैसे ये क्षमताएँ बढ़ती जाती हैं वैसे-वैसे व्यापक दायरे वाले गतिविधियों को एकीकृत करना सम्भव होने लगता है। इसी तरह वे यह भी समझने लगे हैं कि जब कोई नई बात आरम्भ की जाती है तो कुछ समय तक उस पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है, लेकिन इससे समुदाय-निर्माण के उनके प्रयासों के अन्य पहलुओं का महत्व किसी भी तरह कम नहीं हो जाता। वे यह समझते हैं कि यदि सीखने की प्रक्रिया को उनके कार्य-संचालन का तरीका होना है तो उन्हें योजना के किसी भी साधन द्वारा प्रस्तुत की गई ऐसी किसी भी सम्भावना के प्रति सजग रहना होगा जो किसी विशेष समय के लिए विशेषतौर पर उपयुक्त साबित हों और, आवश्यकता पड़ने पर, उन्हें इसके विकास के लिए अधिक शक्ति लगानी होगी, परन्तु इसका यह अभिप्राय नहीं कि हर व्यक्ति को योजना के एक ही पहलू पर लगे रहना चाहिए। मित्रों ने यह भी सीखा है कि यह आवश्यक नहीं है कि विकास- कार्यक्रम के प्रत्येक चक्र के विस्तार-चरण का मुख्य ध्यान एक ही लक्ष्य की दिशा में निर्दिष्ट हो। उदाहरण के लिए, परिस्थितियों की मांग हो सकती है कि किसी खास चक्र में मुख्य ध्यान शिक्षण के गहन प्रयासों -- व्यक्तिगत अथवा सामूहिक -- के माध्यम से लोगों को प्रभुधर्म के दायरे में आमंत्रित करने पर दिया जाए। दूसरे चक्र में, किसी विशेष मूल गतिविधि की संख्या बढ़ाने पर ध्यान केन्द्रित किया जा सकता है।

इसके अलावा, मित्रगण इस बात से भी अवगत हैं कि अलग- अलग जगहों में प्रभुधर्म के कार्य के विकास की गति अलग-अलग होती है और इसका समुचित कारण भी है -- आखिर यह एक सहज रूप से आगे बढ़ने वाली अद्भुत घटना है -- और वे प्रगति की हर घटना को देखकर आनंदित एवं उत्प्रेरित होते हैं। वास्तव में, समग्र के विकास में प्रत्येक व्यक्ति के योगदान से मिलने वाले लाभ को वे समझते हैं, और इस प्रकार, हर व्यक्ति की अपनी परिस्थिति-जनित सम्भावनाओं को ध्यान में रखते हुए, एक-एक व्यक्ति द्वारा प्रदान की गई सेवा का सभी स्वागत करते हैं। समीक्षा बैठकों को ऐसे अवसरों के रूप में अब अधिकाधिक देखा जाने लगा है जहाँ समुदाय के समग्र प्रयासों के बारे में गंभीरतापूर्ण और उत्साहवर्धक वातावरण में चर्चा की जाती है। प्रतिभागियों को यह जानने का अवसर मिलता है कि कुल मिलाकर क्या-क्या कार्य हुए हैं, इस आलोक में वे

स्वयं अपने प्रयत्नों के बारे में समझते हैं, तथा संस्थाओं द्वारा दी गई सलाहों को आत्मसात करके एवं साथी बहाईयों के अनुभवों से सबक सीखकर विकास की प्रक्रिया के बारे में अपना ज्ञान बढ़ाते हैं। ये अनुभव ऐसे कई अन्य स्थानों पर भी साझा किए जाते हैं जो विशिष्ट गतिविधियों में गहनता से जुटे मित्रों के बीच परामर्श के स्थलों के रूप में उभरने लगे हैं -- चाहे वे मित्रगण किसी सामान्य कार्य-योजना पर काम कर रहे हों या क्लस्टर के किसी खास हिस्से में अपनी सेवा दे रहे हों। ये सभी अन्तर्दृष्टियाँ इस व्यापक समझ में निहित हैं कि ऐसे वातावरण में विकास सर्वाधिक सरलता से प्राप्त किया जाता है जो प्रेम से परिपूरित हो -- एक ऐसा वातावरण जिसमें खामियों को सहिष्णुता के साथ नज़रअंदाज किया जाता है, बाधाओं पर धैर्य से विजय पाई जाती है और जाँचे-परखे तौर-तरीकों को उत्साहपूर्वक अपनाया जाता है। और इसी तरह, हर स्तर पर कार्यरत प्रभुधर्म की संस्थाओं और एजेन्सियों के बुद्धिमत्तापूर्ण मार्गदर्शन के माध्यम से, मित्रों के प्रयास -- व्यक्तिगत रूप से वे चाहे कितने ही छोटे प्रयास क्यों न हों -- एक सामूहिक प्रयास में जाकर मिल जाते हैं, यह सुनिश्चित करने के लिए कि 'आशीर्वादित सौन्दर्य' के आह्वान के प्रति लोगों की ग्रहणशीलता को तेजी से पहचाना जा सके और प्रभावी ढंग से उसका पोषण किया जा सके। ऐसी शर्तों को पूरा करने वाला क्लस्टर स्पष्ट रूप से वह क्लस्टर है जहाँ व्यक्ति, संस्थाओं और समुदाय -- अर्थात् योजना के इन तीन नायकों -- के बीच सम्बन्धों का भलीभाँति विकास हो रहा हो।

बढ़ते हुए गतिविधियों की इस पृष्ठभूमि से निहारने पर, एक परिदृश्य ख़ासतौर पर उल्लेखनीय लगता है। आज से तीन साल पहले आपको सम्बोधित एक संदेश में हमने यह आशा प्रकट की थी कि ऐसे क्लस्टरों में जहाँ गहन विकास कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं, वहाँ के मित्रगण गाँवों और मुहल्लों में गहन कार्यकलाप के केन्दों का विकास करके समुदाय-निर्माण के तौर-तरीकों के बारे में और अधिक बातें सीखने का प्रयास करेंगे। हमारी इस आशा से भी बेहतर परिणाम प्राप्त हुए हैं, क्योंकि ऐसे क्लस्टरों में भी जहाँ विकास-कार्यक्रम अभी गहनता को नहीं प्राप्त हुए हैं, कुछेक द्वारा छोटे-छोटे क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के बीच गतिविधियाँ आरम्भ करने के प्रयासों ने बार-बार अपनी प्रभावशीलता दर्शाई है। सारांश रूप में, इन प्रयासों का ध्यान बहाउल्लाह की शिक्षाओं के प्रति उन जनसमूहों की तत्परता पर केन्द्रित है जो 'उनके' प्रकटीकरण द्वारा सम्पोषित आध्यात्मिक रूपांतरण के लिए तैयार खड़े हैं। प्रशिक्षण संस्थान द्वारा संवर्द्धित शैक्षणिक प्रक्रिया में अपनी भागीदारी के माध्यम से ये लोग समाज द्वारा उनके मन में बैठा दी गई जड़ता और उदासीनता को उखाड़ फेंकने और उसकी जगह जीवन को बदल देने में सक्षम

कार्य-पद्धतियों का अनुसरण करने के लिए प्रेरित किए गए हैं। जहाँ कहीं भी यह तरीका किसी गाँव या पास-पड़ोस में कुछ वर्षों तक लगातार विकसित किया गया है और मित्रों ने उस पर अपना ध्यान केन्द्रित रखा है वहाँ क्रमिक किन्तु अचूक रूप से उल्लेखनीय परिणाम दिखने लगे हैं। अपने इर्द-गिर्द के अपने से छोटी उम्र के लोगों के विकास के लिए दायित्व ग्रहण करने में युवाओं का सशक्तिकरण किया गया है। पूरे समुदाय के गतिविधियों के बारे में सार्थक विचार-विमर्श की प्रक्रिया में युवाओं के योगदान का उम्रदराज़ लोगों ने स्वागत किया है। युवाओं और वयस्कों दोनों ही के लिए, समुदाय की शैक्षणिक प्रक्रिया द्वारा विकसित की गई अनुशासन की भावना, परामर्श के लिए क्षमता का निर्माण करती है और सार्थक बातचीत के लिए और भी नए दायरे उभरने लगते हैं। तथापि परिवर्तन केवल बहाईयों और उन्हीं लोगों तक सीमित नहीं है जो योजना के आह्वान पर गतिविधियों के संचालन में जुटे हुए हैं, जिनसे सहज ही यह अपेक्षा की जा सकती है कि कालक्रम में वे नई विचार-पद्धतियों का अनुसरण करें। स्थान विशेष की चेतना पर ही प्रभाव पड़ रहा है। एक विशाल जनसंख्या-समूह में भक्तिपरक मनोवृत्ति अपना आकार ग्रहण कर रही है। स्त्री-पुरुष की समानता के स्वर और अधिक मुखरित होने लगे हैं। बच्चों की शिक्षा-- लड़कों और लड़कियों दोनों की -- पर और अधिक ध्यान दिया जाने लगा है। परिवार के सदस्यों के बीच के अन्तर्सम्बन्ध की प्रकृति, जो कि सदियों पुरानी मान्यताओं द्वारा गढ़ी गई थी, बड़ी तेजी से बदलने लगी है। अपने निकटस्थ समुदाय और भौतिक पर्यावरण के प्रति उत्तरदायित्व की भावना प्रचलित होने लगी है। यहाँ तक कि पूर्वाग्रह का अभिशाप भी, जिसकी दूषित छाया हर समाज पर पड़ रही है, एकता की बाध्यकारी शक्ति के आगे झुकने लगा है। संक्षेप में, मित्रगण समुदाय-निर्माण के जिस कार्य में लगे हुए हैं वह पूरी संस्कृति के पहलुओं पर अपना प्रभाव डाल रहा है।

विगत वर्ष में जहाँ एक ओर विस्तार और सुगठन के कार्य में सतत् प्रगति हुई है वहीं दूसरी ओर कार्यकलाप के अन्य क्षेत्र भी प्रायः समानांतर रूप से आगे बढ़े हैं। एक मुख्य उदाहरण के रूप में, कुछ गाँवों और मुहल्लों में संस्कृति के स्तर में जो उन्नति देखी गई है, उस पर सामाजिक क्रियाकलापों में बहाई भागीदारी के कारण सीखी-समझी बातों का असर कम नहीं है। हमारे सामाजिक-आर्थिक विकास कार्यालय ने हाल ही में एक दस्तावेज़ तैयार किया है जिसमें बहाई विश्व केन्द्र में उस कार्यालय की स्थापना से लेकर इस क्षेत्र में तीस वर्षों के अनुभव का निचोड़ प्रस्तुत किया गया है। उसमें जिन तथ्यों की बानगी प्रस्तुत की गई है उसमें एक यह भी है कि सामाजिक क्रियाकलापों में संलग्न होने सम्बन्धी प्रयासों की एक प्रमुख प्रेरणा प्रशिक्षण संस्थान से प्राप्त हुई है। यह

केवल संस्थान द्वारा प्रशिक्षित मानव संसाधन के बढ़ने से सम्भव नहीं हुआ है। संस्थान प्रक्रिया द्वारा संवर्द्धित आध्यात्मिक अन्तर्दृष्टियाँ, गुण और योग्यताएँ, सामाजिक क्रियाकलापों में भागीदारी निभाने की दृष्टि से उतनी ही निर्णायक साबित हुई हैं जितनी विकास-प्रक्रिया में योगदान देने की दृष्टि से। उसके बाद विस्तार से यह बताया गया है कि किस प्रकार बहाई समुदाय के प्रयासों के सुस्पष्ट क्षेत्र, परस्पर एक-दूसरे को बल प्रदान करने वाले तत्वों से निर्मित एक सामान्य, विकासशील, अवधारणात्मक संरचना से शासित होते हैं, भले ही ये तत्व विभिन्न कार्यक्षेत्रों में, विविध रूपों में स्वयं को अभिव्यक्त करते हों। हमने जिस दस्तावेज़ का वर्णन किया है उसे हाल ही में राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं के साथ साझा किया गया है और हम उन्हें आमंत्रित करते हैं कि वे, सलाहकारों के साथ परामर्श करते हुए, यह विचार करें कि उसमें तलाशी गई अवधारणाओं से उन (राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं) के तत्वावधान में संचालित सामाजिक क्रियाकलापों के मौजूदा प्रयासों को और समृद्ध बनाने और बहाई कार्यकलाप के इस महत्वपूर्ण आयाम के प्रति जागरूकता बढ़ाने में कैसे मदद मिल सकती है। परन्तु इसे इस क्षेत्र में व्यापक कार्यकलाप चलाने के आह्वान के रूप में नहीं समझा जाना चाहिए -- जब कोई विकासशील समुदाय सशक्त हो जाता है तो सामाजिक क्रियाकलाप का अभ्युदय सहज रूप से होने लगता है -- परन्तु समय का यह तकाजा जरूर है कि समाज के रूपांतरण के लिए किए जा रहे प्रयत्नों के निहित अर्थों के बारे में मित्रों को अधिक गहनता से सोचना चाहिए। इस क्षेत्र में सीखने की जो बढ़त परिलक्षित हो रही है उससे सामाजिक-आर्थिक विकास कार्यालय से और अधिक अपेक्षाएँ बढ़ गई हैं, और यह सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाए जा रहे हैं कि इसी अनुपात में उसके कार्य-प्रकार्यों का भी आगे विकास हो सके।

पिछले बारह महीनों की एक खास रूप से उल्लेखनीय विशेषता रही, अनेक बार और अनेक व्यापक प्रसंगों में, समान विचार वाले लोगों के साथ मिलकर समाज की बेहतरी के लिए किए जाने वाले प्रयासों के संदर्भ में बहाई समुदाय की पहचान स्थापित होना। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र से लेकर अत्यंत निचले स्तर पर ग्रामीण जीवन तक के प्रसंग में, हर प्रकार की पृष्ठभूमि वाले अग्रणी विचारकों ने अपनी यह जागरूकता दर्शाई है कि बहाईयों के मन में मानवजाति के कल्याण की केवल भावना ही नहीं है, बल्कि उनके पास इसकी स्पष्ट परिकल्पना भी है कि अपनी अभिलाषाओं को साकार रूप देने के लिए क्या किया जाना है और उनके लिए प्रभावी साधन क्या हैं। सराहना और समर्थन की ये अभिव्यक्तियाँ, पहले से अनपेक्षित कुछ हिस्सों से भी प्रकट हुई हैं। उदाहरण के लिए,

प्रभुधर्म की जन्मभूमि (ईरान) में भी विरोधियों द्वारा बहाईयों के पथ पर बिछाई गई एक से एक कठिन बाधाओं के बावजूद उनकी पहचान अब इस रूप में बढ़ती जा रही है कि अपने राष्ट्र की स्थिति के संदर्भ में बहाईयों के पास जो संदेश है उसका अभिप्राय गंभीर है, और अपनी मातृभूमि की उन्नति के लिए उनके अदम्य दृढ़ संकल्प के कारण उनके प्रति आदर की भावना का दिन-प्रतिदिन विकास होता जा रहा है।

ईरान के निष्ठावान बहाईयों द्वारा, ख़ासतौर पर दमन की नई लहर आरम्भ किए जाने के बाद के दशकों में, जो यातनाएँ झेली गई हैं उनसे अन्य देशों में रहने वाले उनके भाई-बहनों को उनकी रक्षा के लिए आगे आने की प्रेरणा मिली है। उनकी सहिष्णुता के परिणामस्वरूप विश्वव्यापी बहाई समुदाय ने जिन बहुमूल्य निधियों में से एक अर्जित की है उसका उल्लेख हम यहाँ कर रहे हैं: राष्ट्रीय स्तर पर विशेष एजेन्सियों का एक असरदार नेटवर्क जो सरकारों एवं नागरिक समाज के संगठनों के साथ सुव्यवस्थित रूप से सम्बन्धों का विकास करने में सक्षम साबित हुआ है। इसी के समानांतर, क्रमिक योजनाओं की प्रक्रियाओं के कारण हर जगह, जहाँ कहीं भी ऐसी बातचीत का मौका सामने आता हो, उनमें भाग लेने की समुदाय की क्षमता परिमार्जित हुई है -- व्यक्तिगत बातचीत से लेकर अन्तर्राष्ट्रीय मंचों तक। निचले स्तरों पर, इस प्रकार के प्रयासों में भागीदारी का विकास स्वाभाविक रूप से होता है -- उसी सहज तरीके से जो कि सामाजिक क्रियाकलापों में मित्रों की सतत् बढ़ती भागीदारी को परिलक्षित करता है, और इसे उत्प्रेरित करने के लिए किसी विशेष प्रयास की आवश्यकता नहीं होती। जबकि राष्ट्रीय स्तर पर, इन समर्पित एजेन्सियों के लिए जो कि दर्जनों राष्ट्रीय समुदायों में पहले ही से कार्यरत हैं, इस विषय पर प्रायः विशेष रूप से ध्यान केन्द्रित करना आवश्यक होने लगा है, और इस काम को सक्रियता, समीक्षा, परामर्श और अध्ययन के उसी सुपरिचित और सार्थक तरीके से आगे बढ़ाया जा रहा है। ऐसे प्रयासों को और समृद्ध बनाने के लिए, इस विशेष क्षेत्र में सीखने की प्रक्रिया को मदद देने हेतु, और यह सुनिश्चित करने के लिए कि उठाए गए कदम बहाई समुदाय द्वारा किए जा रहे अन्य प्रयासों के समरूप हों, हमने हाल ही में बहाई विश्व केन्द्र में एक जन सम्भाषण कार्यालय (ऑफिस ऑफ पब्लिक डिस्कोर्स) की स्थापना की है। हम उनका आह्वान करेंगे कि वे क्रमिक रूप से गतिविधियों का संयोजन और अनुभवों को सुनियोजित करते हुए इस क्षेत्र में राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं को सहयोग दें।

अन्य क्षेत्रों में भी उत्साहजनक रूप से प्रगति हो रही है। सांतिएगो, चिली, में जहाँ दक्षिणी अमेरिका के 'मातृ मन्दिर' का निर्माण किया जा रहा है, निर्माण का कार्य तेजी से चल रहा है। आधारशिलाओं, बेसमेंट और सर्विस टनेल का कंक्रीट निर्माण पूरा हो गया है, और साथ ही मुख्य संरचना को सहारा देने वाले स्तम्भ भी बनकर तैयार हैं। इस परियोजना के बारे में उत्सुकता बढ़ती जा रही है, और ऐसी ही उत्सुकता की भावना उन सात देशों में भी बनी हुई है जहाँ राष्ट्रीय अथवा स्थानीय मशरिकुल-अज़कारों का निर्माण होना है। इनमें से प्रत्येक में तैयारियाँ आरम्भ हो चुकी हैं और 'मन्दिर कोष' (टैम्पल्स फण्ड) में मित्रों द्वारा दिए जा रहे दान का उपयोग किया जाना भी शुरू हो चुका है। परन्तु व्यावहारिक बातें, जैसेकि स्थान, डिजाइन, और संसाधन मित्रों द्वारा आरम्भ किए जा रहे इस कार्य के केवल एक ही पहलू का प्रतिनिधित्व करती हैं। मूलभूत रूप से, यह उनका एक आध्यात्मिक प्रयास है, एक ऐसा प्रयास जिसमें सारा समुदाय अपनी हिस्सेदारी निभाता है। प्रिय मास्टर ने मशरिकुल-अज़कार को “दिव्य सम्पुष्टियों का चुम्बक”, “प्रभु की शक्तिशाली आधारशिला” और “ईश्वर के धर्म का सुदृढ़ स्तम्भ” कहकर सम्बोधित किया है। जहाँ कहीं भी इसकी स्थापना की जाएगी, यह सहज रूप से अपने आस-पास के समुदाय की निर्माण-प्रक्रिया का आधारभूत घटक बनेगा। जिन स्थानों में बहाई उपासना मन्दिर का निर्माण होने जा रहा है, वहाँ धर्मानुयायियों के हर तबके में इस सच्चाई की गहरी समझ पहले ही से पनपने लगी है, जो यह महसूस करने लगे हैं कि उनके सामूहिक जीवन में उपासना और सेवा की भावना का संयोजन अब अधिक से अधिक झलकना चाहिए, जिसका मशरिकुल-अज़कार स्वयं एक मूर्तिमान स्वरूप है।

अतः, हर मोर्चे पर हम यह देखते हैं कि बहाई समुदाय निरन्तर आगे बढ़ रहा है, उसकी समझ उन्नत हो रही है, वह अपने अनुभव से अन्तर्दृष्टियाँ प्राप्त करने को उत्सुक है, जब कभी भी संसाधन इसे सम्भव बनाते हैं वह नई जिम्मेवारियाँ निभाने के लिए तैयार खड़ा है, वह नई-नई जरुरतों के प्रति प्रत्युत्तरशील है, जिन कार्यों में वह संलग्न है उनके विविध गतिविधियों के बीच तालमेल सुनिश्चित करने की आवश्यकता के प्रति सचेत है, अपने मिशन को पूरा करने के लिए पूर्णतः समर्पित है। करीब दो महीने पहले पूरे विश्व में आयोजित किए जाने वाले 95 युवा अधिवेशनों की घोषणा के प्रति उसकी अपार उत्कण्ठा से उसके उत्साह और समर्पण की झलक मिलती है। हम न केवल स्वयं युवाओं की प्रतिक्रिया से संतुष्ट हैं बल्कि उनके साथी बहाईयों द्वारा -- जो इस बात को समझते हैं

कि बहाउल्लाह् के युवा अनुयायी किस प्रकार धर्म के सम्पूर्ण ढाँचे के लिए एक महत्वपूर्ण उत्प्रेरक के रूप में काम करते हैं -- समर्थन के जो स्वर ध्वनित किए गए उससे भी।

बहाउल्लाह् के संदेश के प्रसार, उसके प्रभाव के विस्तार और उसमें निहित आदर्शों के प्रति लोगों की बढ़ती हुई जागरूकता के क्रमिक प्रमाणों को देखकर हम आशान्वित हैं। वर्षगांठों की इस बेला में, हम इस रिज़्वान से डेढ़ शताब्दी के समय के फासले पर खड़े "अतिशय आनन्द के उस दिवस" को याद करते हैं जब 'आभा सौन्दर्य' ने नज़ीबियाह् के बगीचे में अपने साथियों के समक्ष पहली बार अपने मिशन की घोषणा की थी। उस पवित्र स्थली से, आज ईश्वर की वाणी मानवजाति को अपने प्रभु के सम्मुख उपस्थित होने का आह्वान सुनाती हुई हर नगर, हर कगार तक पहुँच चुकी है। और उन आरम्भिक ईश्वर के प्रेमोन्मत्त सेवकों से शुरू होकर आज एक विविधतापरक, उद्देश्यपूर्ण समुदाय पल्लवित हो चुका है, 'उनके' बगीचे में वैविध्यपूर्ण फूल उगा दिए हैं। हर बीतते हुए दिन के साथ, नई जागृति से सम्पन्न नित बढ़ती हुई संख्या में आत्माएँ उनकी समाधि की ओर याचनामय भाव से अभिमुख होती हैं -- उस स्थल की ओर जहाँ उस 'आशीर्वादित दिन' के सम्मान में तथा 'महानतम नाम' के समुदाय को प्रदान की गई हर कृपा के प्रति आभार स्वरूप, हम 'पवित्र देहली' पर प्रार्थना में अपना सिर नवाते हैं।

-विश्व न्याय मन्दिर